शोध मंथन Vol. XII No.I Jan.-March 2021 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: http:/shodhmanthan.anubooks.com

गोरखपुर मण्डल उत्तर प्रदेश में पर्यटन उद्योग का विकास, सममस्याएं एवं सम्भावनाएं

डॉ0 विजय कुमार

प्राप्तिः 29.01.2021
स्वीकृतः 05.03.2021

सारांश

विश्व के आर्थिक विकास में पर्यटन उद्योग का महत्व भलीभांति परिचित है, समस्त पर्यटन क्रियाएं राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को बड़ी तीव्र गति से प्रभावित करती है। पर्यटन विकास से भी बहुत से आर्थिक एवं सामाजिक लाभ उत्पन्न होते हैं। हम सम्पूर्ण पर्यटन उद्योग की रोजगार क्षमता की ओर दृष्टि डालें तो ज्ञात होगा कि पर्यटन व्यवसाय के विकास से असंख्य रोजगार का सृजन होता है तथा अन्य साधारण उद्योगों की तुलना में इस उद्योग से कई गुना अधिक रोजगार उत्पन्न होते हैं। वर्तमान समय में पर्यटन विश्व का एक बड़ा ही प्रभावशाली उद्योग है ज्ञानवर्धन तथा भावनात्मक एकता के लिए पर्यटन का प्राचीन काल से ही एक विशिष्ट स्थान रहा है। लोगों के रहन–सहन, तौर तरीके उनकी संस्कृति, भाव एवं खान–पान का परोक्ष रूप से ज्ञान प्राप्ति, केवल पर्यटन द्वारा ही सुलभ हो सकता है। मनुष्य जन्म से ही एक कौतूहल प्रिय प्राणी है। सृष्टि की असीम सम्पदा के अवलोकन से ही उसने नवीन अनुभव किये। ऐतिहासिक काल के प्रारम्भ से ही हमारे पूर्वजों ने यात्राओं का सिलसिला प्रारम्भ कर दिया था। ये यात्री मुख्यतः व्यापारी, धर्म यात्री या ज्ञानोत्सुक विद्वान थे जो नवीन और रोमांचक अनुभवों की खोज के प्रति सदैव उत्सुक रहते थे। प्राचीन काल से ही देशान्तरों में व्यापार और वाणिज्य एक महत्वपूर्ण प्रेरक शक्ति का स्रोत था। पर्यटन विकास सम्भावनाओं एवं समस्याओं हेतु गोरखपुर मण्डल में विशेष रूप से गोरखपुर, कुशीनगर, देवरिया तथा महराजगंज जनपद उत्तर प्रदेश में पर्यटन विकास की सम्भावनाओं हेतु अपना प्रमुख स्थान रखते हैं।

मुख्य शब्द– *पर्यटन, उद्योग, बाजार, सांस्कृतिक विकास, आर्थिक विकास, सामाजिक विकास, संस्कृति, समस्याएं, सम्भावनाएं।*

प्रस्तावना

सैर कर दुनिया की ग़ाफिल ज़िन्दगानी फिर कहाँ?जिन्दगानी भी रही, तो नौजवानी फिर कहाँ?

–इस्माईल मेरठी

शायर की उपरोक्त पंक्तियों में क्या खूब लिया है। वास्तव में पर्यटन के माध्यम से हम

अपने देश, समाज के परिवेश के बारे में जान और समझ सकते हैं और जब हमें भारत के बारे में जानना हो तो कहना ही क्या। भारत जैसे विशालतम् देश में अनेकों पर्यटन केन्द्र है, जिनकी व्याख्या करना आसान नहीं है। भारत विरासत और सुन्दरता से भरा हुआ देश है। इसमें जीवन भर घूमते रहे तब भी यह यात्रा समाप्त नहीं होती है। क्योंकि पर्यटन द्वारा व्यक्तियों 'पर्यटक' के सपनों को पूरा किया जाता है जीवन एक यात्रा है, लंबी और अनंत यात्रा इसमें भी बहुत कुछ दूर से बड़ा मनोरम दिखता है, जो कठिन और दुष्कर होता है।

पर्यटन के विकास से प्रत्येक देश के विभिन्न पहलुओं का विकास होता है। पर्यटन ही एक ऐसा उद्योग है जिससे हर देश की सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक विकास की सम्भावनायें जुड़ी रहती हैं। यदि ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में पर्यटन के विकास को देखें तो पर्यटन उतना ही पुराना है जितना कि मानव सभ्यता। जैसे–जैसे सभ्यताओं का विकास होता रहा, पर्यटन का स्वरूप और विकास दोनों ही बदलते रहे हैं। भारत में पर्यटन प्राचीनकाल से ही आकर्षण का केन्द्र रहा है। प्रारम्भिक काल से ही लोग धार्मिक, आध्यात्मिक, शैक्षिक तथा ऐतिहासिक स्थलों की यात्र करते रहे हैं। स्वातंत्रयोपरान्त तो पर्यटन के क्षेत्र में अत्यधिक प्रगति हुई है। आज भारत में पर्यटन उद्योग यहाँ की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। भारत सरकार ने पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु 1986 में इसे उद्योग का दर्जा दिया है तथा 1998 में देश के लिये नई पर्यटन नीति की घोशणा की गई है। नई पर्यटन नीति में मुख्यतः 6 क्षेत्रें– स्वागत, सुरक्षा, सुविधा, सहयोग और ढाँचागत् विकास के लिये निजी भागीदारी पर बल दिया गया है। यदि भौगोलिक परिप्रेक्ष्य में पर्यटन के विकास को देखा जाये तो पर्यटन पृथ्वी के भौगोलिक रूपों के साथ बदलता रहता है। पृथ्वी पर जो क्षेत्र जैसे भौगोलिक रूप से बदलता है उस क्षेत्र की सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय स्थिति भी बदलती रहती है।

यह अन्य आर्थिक क्रियाओं की भाँति ही माँग उत्पन्न करता है, पर्यटन द्वारा असंख्य पृथक तथा विविध उद्योगों के लिए बाजार प्रस्तुत करता है। पर्यटन को आज अनेकानेक रूपों में परिभाषित किया जाता है। जिनमें अनेक देशी और विदेशी विद्वान् सम्मिलित हैं। सामान्य रूप से स्वीकृत परिभाषाओं के अनुसार 'पर्यटक अस्थाई भ्रमणकर्ता होता है जो यात्र किये गए देश में एक रात ही ठहरते हैं तथा जिनकी यात्र का उद्देश्य आराम तथा मनोरंजन होता है। पर्यटकों के स्वास्थ्य, अध्ययन, खेलकूद, धर्म, व्यावहारिक स्वरूप प्रदान करने हेतु पर्यटकीय सेवाओं की आवश्यकता पड़ती है जिनमें विभिन्न प्रकार के परिवहन के साथ आवास व्यवस्था एवं भोजन प्रबन्ध, मनोरंजन यात्र अभिकर्ता एवं यात्र संचालक तथा सूचना एवं प्रलेखन आवश्यक करने हेतु पर्यटन को सुसंगठित स्वरूप प्रदान करने हेतु पर्यटन को अनेकानेक प्रकार में विभाजित किया जा सकता है। जैसे घरेलू या आन्तरिक पर्यटन, अन्तर्राष्ट्रीय या विदेशी पर्यटन, मौसमी पर्यटन, व्यवसायिक, सामूहिक एवं सामाजिक पर्यटनों में विभाजित किया जा सकता है। पर्यटन विकास हेतु यदि हम भारत एवं उत्तर–प्रदेश का साथ–साथ अध्ययन करें तो हम पाते हैं कि पर्यटन भारतवासियों के जीवन का अभिन्न अंग रहा है। सामान्य आर्थिक सेवा और सामाजिक घटना के रूप में पर्यटन स्वतन्त्रता के बाद की देन है। पर्यटन आज विश्व का सबसे बड़ा निर्यात उद्योग बन गया है। भारत इसमें से मात्र 0–4 प्रतिशत भाग ही पाता है। लेकिन प्रयास जारी है और

इस बात की पूरी सम्भावना है कि भारत विदेशी पर्यटकों की प्रिय मंजिल बन कर रहेगा। उत्तर प्रदेश भारत का हृदय प्रदेश है अपनी सम्पूर्ण विविधता और स्वाभाविक स्थिति के कारण उत्तर प्रदेश को लघु भारत की संज्ञा दी जाती है। उत्तर प्रदेश में सांस्कृतिक विविधता का वैभवशाली भूगोल है। भारतीय दर्शन में पूज्य अवतार राम और कृष्ण की जन्म भूमि अयोध्या और मथुरा से लेकर मृत्योपरान्त मोक्ष दायिनी काशी उत्तर प्रदेश में ही स्थित है। उत्तर प्रदेश में यदि पर्यटन का इतिहास लगभग दो हजार वर्ष से भी अधिक पुराना है परन्तु उत्तर प्रदेश में पर्यटन संगठन मात्र चार दशक पुराना ही है। यहाँ की सांस्कृतिक उपलब्धियों, पुरावशेषों, ऐतिहासिक तथा धार्मिक महत्ता के कारण ही पर्यटन की उन्नति के आशानुकूल आधार विद्यमान है।

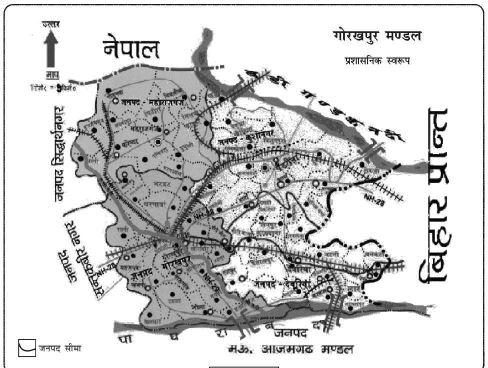

मानचित्र संख्या–3

पर्यटन उद्योग के विकास की समस्याओं एवं सम्भावनाओं हेतु गोरखपुर मण्डल में विषेश रूप से गोरखपुर, कुशीनगर, देवरिया तथा महराजगंज जनपद उत्तर प्रदेश में पर्यटन विकास की सम्भावनाओं हेतु अपना प्रमुख स्थान रखते हैं। अध्ययन क्षेत्र का अक्षांशीय विस्तार $26^{0}3'3''$ उत्तर से $27^{0}20'16''$ उत्तर तथा देशान्तरीय विस्तार $83^{0}6'20''$ पूर्व से $84^{0}9'25''$ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। अध्ययन क्षेत्र गोरखपुर मण्डल उत्तर प्रदेश राज्य के मैदानी भूभाग में स्थित है। जिसमें उत्तर प्रदेश के चार जनपद क्रमशः गोरखपुर, कुशीनगर, देवरिया तथा महराजगंज से मिलकर बना है। मण्डल में कुल 23 तहसीलें, 62 विकासखण्ड, 610 न्याय पंचायत, 4513 ग्राम पंचायत, 7647 आबाद गाँव तथा 632 गैर आबाद गाँव तथा कुल गाँव 8279 हैं। मण्डल में 39 नगर, 1 नगर निगम, 7 नगर पालिका परिषद तथा 4 नगर पंचायत व 6 सेन्सस टाउन हैं। गोरखपुर मण्डल का कुल क्षेत्रफल 11717 वर्ग कि0मी0 है।[1]

गोरखपुर मण्डल की अर्थव्यवस्था में तो पर्यटन से होने वाली आय भी प्रमुख है। गोरखपुर मण्डल में यदि पर्यटन केन्द्रों के विकास पर यदि दृष्टिपात करें तो हम पातें हैं कि गोरखपुर मण्डल में, गोरखपुर तथा कुशीनगर जनपद में ही अधिकांश पर्यटन केन्द्र स्थित हैं। अध्ययन क्षेत्र के गोरखपुर तथा कुशीनगर जनपद तथा आसपास के पर्यटन केन्द्रों का विशद् अध्ययन किया गया है। जिनमें, गोरखपुर, कुशीनगर, देवरिया, महराजगंज, आदि में स्थित गोरखनाथ मन्दिर एवं विश्व प्रसिद्ध कुशीनगर के बौद्ध मन्दिर आदि रहे हैं। गोरखपुर मण्डल के प्रमुख पर्यटन स्थलों में गोरखपुर मन्दिर–गोरखपुर रेलवे स्टेशन से 4 कि0मी0 दूरी पर नेपाल रोड पर स्थित नाथ सम्प्रदाय के संस्थापक परम सिद्ध गुरु गोरक्षनाथ नाम का अत्यन्त सुन्दर भव्य

मन्दिर स्थित है। यहाँ प्रतिवर्ष मकर संक्राति के अवसर पर खिचड़ी मेला का आयोजन होता है। जिसमें लाखों की संख्या में श्रद्धालूध्पर्यटक सम्मिलित होते हैं। यह मेला एक माह तक चलता है। गोरखपुर में एक और प्रसिद्ध मन्दिर विष्णु मन्दिर है।[2]

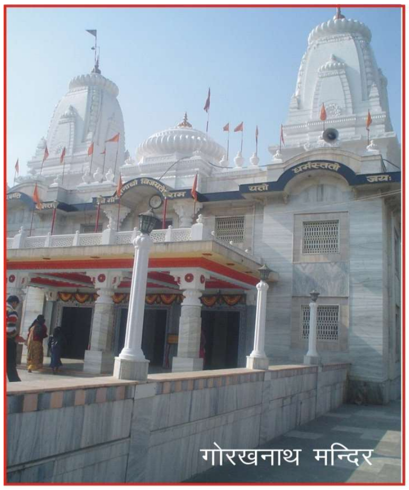
गोरखनाथ मन्दिर

इण्डो–जापान, श्रीलंका मन्दिर

महापरिनिर्वाण मन्दिर में लेटी हुई भगवान बुद्ध की प्रतिमा

गोरखपुर मण्डल में अन्य पर्यटक केन्द्रों में गीता प्रेस का नाम आता है। गोरखपुर रेलवे स्टेशन से 3 कि0मी0 पर 1700 एकड़ के विस्तृत भू–भाग में रामगढ़ ताल स्थित है। यह पर्यटकों के लिए अत्यन्त आकर्षण केन्द्र है। यहाँ पर जल क्रीड़ा केन्द्र, बौद्ध संग्रहालय, तारा मण्डल, चम्पादेवी पार्क एवं अम्बेडकर उद्यान आदि दर्शनीय स्थल हैं। गोरखपुर नगर के मध्य में रेलवे स्टेशन से 2 कि0मी0 दूरी पर स्थित इमामबाड़ा का निर्माण हजरत बाबा रोशन अलीशाह की अनुमति से सन् 1717 ई0 में नवाब आसफुद्दौला ने करवाया उसी समय से यहाँ पर दो बहुमूल्य

ताजिया का एक स्वर्ण और दूसरा चाँदी का रखा हुआ है। यहाँ से मुहर्रम का जुलूस निकलता है। गोरखपुर के अन्य पर्यटन स्थलों में गीता वाटिका, रेल म्यूजियम, राजकीय बौद्ध संग्राहलय, सूर्यकुण्ड धाम, चौरी चौरा शहीद स्मारक आदि हैं।[3]

गोरखपुर मण्डल में अन्तर्राष्ट्रीय बौद्ध पर्यटन स्थल कुशीनगर राष्ट्रीय मार्ग संख्या 28 पर गोरखपुर से 53 कि0मी0 पूरब दिशा में स्थित है। यहीं पर भगवान बुद्ध ने अपना अन्तिम उपदेश दिया और महापरिनिर्वाण को प्राप्त हुए। यहाँ के दर्शनीय स्थल महापरिनिर्वाण मन्दिर, मुख्य स्तूप, माथा कुंवर मन्दिर, रामाभार स्तूप, इन्डों–जापान श्री लंका मन्दिर, वाट थाई मन्दिर, म्यूजियम, मेटीडेशन पार्क, चाइनीज मन्दिर, कोरियन और तिब्बती मिन्दर आदि प्रमुख धार्मिक पर्यटन केन्द्र हैं।

महापरिनिर्वाण मन्दिर और मुख्य स्तूप तथा मन्दिर में लेटी हुई भगवान बुद्ध की मूर्ति कुशीनगर की विशेष शोभा है। महा परिनिर्वाण मन्दिर व स्तूप को श्री ए0सी0 कार्लाइल ने 1876–77 ई0 में बनवाया था। कुशीनगर प्राचीन काल में मल्ल राजाओं की राजधानी थी। यहीं पर 443 ई0 पूर्व वैशाख पूर्णिमा को रात्रि के अन्तिम प्रहर में बौद्ध धर्म के प्रवर्तक भगवान गौतम बुद्ध महापरिनिर्वाण को प्राप्त हुए। भगवान बुद्ध का अन्तिम संस्कार हिरण्यावती नदी के तट पर किया गया, जिसकी पहचान आज रामाभार स्तूप के रूप में की गयी है। इस प्राचीन स्थल को प्रकाश में लाने का श्रेय जनरल कनिंघम और ए0 सी0 कार्लाइल को है।[4]गोरखपुर मण्डलः मुख्य पर्यटन स्थल फोटो

गोरखपुर मण्डल के अन्य पर्यटक केन्द्रों में देवरिया तथा महराजगंज जनपद के पर्यटक स्थल आते हैं। देवरिया जनपद के पर्यटक स्थलों में काकन्दी, कुकुंभ ग्राम, कहाव, दीघेश्वरनाथ, दुगधेश्वरनाथ, महेन्द्र नाथ तथा देवरहा बाबा आश्रम मुख्य है जबकि महराजगंज जनपद के पर्यटक स्थलों में सोहगीबरवा वाइल्ड लाइफ सेंग्चुरी, राजधानी, लेहड़ा देवी मन्दिर, कन्हैया बाबा मन्दिर, शिव स्थान (कटेहरा) आदि पर्यटक स्थल पर्यटकों के आकर्शण का केन्द्र हैं।[5]

पर्यटन केन्द्रों के विकास के लिये क्षेत्र में पर्यटन उद्योग का अर्थशास्त्र एवं आर्थिक विश्लेषण एवं पर्यटन विशयक नीति एवं नियोजन आवश्यक है। भारत सरकार द्वारा 1986 में पर्यटन को उद्योग का दर्जा मिलने के पश्चात् देश–प्रदेश एवं क्षेत्र में पर्यटन उद्योग में चहुँमुखी प्रगति की है। इस उद्योग के माध्यम से देश में समस्त आय का लगभग तीसरा हिस्सा अर्जित किया जाता है। विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने के लिये अपने दूतावासों के माध्यम से भव्य एवं सुनियोजित प्रचार तो किया ही जाता है, पर्यटकों की सभी प्रकार की सुविधाओं का भी ध्यान रखा जाता है। आधुनिक समय में पर्यटन तीर्थाटन के अतिरिक्त औद्योगिकरण का एक सामाजिक रूप है, जिसमें उसके समस्त लाभ शामिल होते हैं। पर्यटन बाजारों की आवश्यकताओं और गन्तव्य स्थानों की पर्यटक क्षमता के वैज्ञानिक अनुसंधान के आधार पर पर्यटन विकास की योजना की आवष्यकता है।

क्षेत्र की पर्यटन योजना में पर्यटन विपणन, जिसमें उपभोक्ता आवश्यकताओं का अभिज्ञान, वास्तविक तथा सम्भावित माँगों का मूल्यांकन समय–समय पर किया जाता है।

गोरखपुर मण्डल में गोरखपुर, कुशीनगर, देवरिया तथा महराजगंज जनपदों में पर्यटन केन्द्रों को विकसित करने हेतु राज्य सरकार तथा पर्यटन विभाग ने ऐतिहासिक तथा धार्मिक स्थलों के विकास तथा सड़क निर्माण एवं सौन्दर्यीकरण पर लाखों रूपये की धनराशि व्यय की है। पर्यटन विपणन के साथ पर्यटन योजना में पर्यटन उत्पाद जिसमें सभी पर्यटन सुविधायें तथा पर्यटन बाजार, विपणन मिश्रण, विपणन साधन (जिसमें विपणन संवर्द्धन, विज्ञापन, जन सम्पर्क) यात्र अभिकरण तथा यात्र–अभिकर्ता आदि सम्मिलित है। यात्र अभिकरण पर्यटक को विभिन्न यात्र कार्यों के विषय में परामर्श देता है। यात्र अभिकरण अपने ग्राहकों के लिये आवास, परिवहन, दृश्यावलोकन, भोजन आदि की व्यवस्था करता है। उक्त कार्यों के अतिरिक्त यात्र–अभिकरण कई प्रकार की सेवायें भी प्रदान करता है। उनमें बीमा, यात्री, चौक, विदेशी मद्रा–विनिमय, पासपोर्ट एवं वीजा आदि सम्मिलित हैं। पर्यटन उद्योग के आर्थिक विश्लेषण में पर्यटक आवासीय व्यवस्था का विष्लेशण एक महत्वपूर्ण घटक है। आवास सुविधाओं के विकास पर परिवहन सुविधाओं का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। आवास सुविधाओं में होटल प्रमुख अंग है इसके अतिरिक्त, धर्मशालायें, होलीडे होम, गेस्ट हाऊस, बोर्डिंग हाउस, प्रावेट होम भी पर्यटक आवास के प्रमुख साधन हैं। गोरखपुर मण्डल में स्थित पर्यटक आवास सुविधाओं का अध्ययन करें तो हमें ज्ञात होता है कि क्षेत्र में स्थित विभिन्न श्रेणी के होटल धर्मशालायें आदि ही पर्यटकों के प्रमुख आवास स्थल है।

गोरखपुर मण्डल का यदि क्षेत्र में आने वाले पर्यटकों की दृष्टि से अध्ययन करें तो हमें पता चलता है कि अध्ययन क्षेत्र में आने वाले पर्यटकों में से अधिकांश पर्यटक स्वदेशी पर्यटक होते हैं जो कि देश के विभिन्न स्थानों से धार्मिक तथा ऐतिहासिक महत्व के स्थलों को देखने आते हैं। ये पर्यटक विभिन्न आय, विभिन्न आयु तथा विभिन्न उद्देश्यों को लेकर आते हैं। विदेशी पर्यटक भारत की विविधतापूर्ण संस्कृति, ऐतिहासिक स्मारकों आदि को देखने आते हैं। क्षेत्र में स्थित गोरखनाथ मन्दिर, गीता प्रेस, इमामबाड़ा, सोहगीबरवा वाइल्ड सेंग्चुरी तथा कुशीनगर के बौद्ध मन्दिर देशी एवं विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने के लिये काफी है। भारत आने वाले विदेशी पर्यटक मुख्य रूप से पश्चिमी यूरोप तथा उत्तरी अमेरिका क्षेत्र से आते हैं इसके अतिरिक्त दक्षिण एशिया तथा पश्चिमी एशियाई देशों से भी पर्यटक भारत आते हैं।

उत्तर प्रदेश से उत्तरांखण्ड के अलग होने के बाद पर्यटन की दृष्टि से गोरखपुर मण्डल के पर्यटन केन्द्र विभिन्न स्तर के देशी एवं विदेशी पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। स्वतंत्रता के पश्चात् से इस क्षेत्र में पर्यटकों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है जिससे यहाँ के निवासियों का जीवन स्तर भी समुन्नत हुआ है परन्तु यह क्षेत्र आज भी अपनी पूर्ण क्षमता से पर्यटकों को आकर्षित नहीं कर पा रहा है क्योंकि पर्यटन के मौसम में इस क्षेत्र में अनेक समस्यायें स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। इन समस्याओं में परिवहन, आवास, सूचना, ऐतिहासिक विरासत के संरक्षण का अभाव, वैधानिक औपचारिकताओं से सम्बन्धित समस्या, विनम्रता तथा सामान्य शिष्टाचार का अभाव, मुद्रा विनिमय की समस्या, स्थानीय यातायात संचालकों का अनुचित व्यवहार, सूचना केन्द्रों एवं सूचना सामग्री का अभाव, निम्न स्तरीय एवं मँहगी होटल सेवा, रेलवे स्टेशन तथा बस अड्डों की शोचनीय दशा, पर्यटन केन्द्रों पर रहने वाले भिखारियों द्वारा उत्पात, अक्षम तथा अप्रशिक्षित पर्यटक गाइड, धर्मशालाओं में सुविधाओं की कमी अध्ययन क्षेत्र के मार्गों की जीर्ण–शीर्ण दशा, प्रचार तथा पर्यटक साहित्य का अभाव स्थानीय दुकानदारों का अनुचित

व्यवहार, दयनीय सफाई व्यवस्था, बैंकों का सुविधायुक्त समय, जल एवं विद्युत की अनियमित आपूर्ति, अवैधानिक अतिक्रमण, अति महत्वपूर्ण व्यक्तियों के लिये विशेष व्यवस्था, चिकित्सा सुविधाओं की कमी, अनाधिकृत वाहनों का चलन, पार्किंग सुविधाओं का अभाव पर्यटक की आंशिक, अंशकालिक तथा मौसमी प्रवृत्ति एवं पर्यटन केन्द्रों पर पर्यावरण प्रदूषण की समस्या प्रमुख है। उपर्युक्त समस्याओं के अतिरिक्त स्थानीय व्यक्तियों का अनुचित व्यवहार, लूटपाट, बलात्कार, ट्रेनों एवं बसों में नशा खिलाकर लूटपाट, विदेशी तथा स्वदेशी महिलाओं से छेड़छाड़, अस्थायी पुस्तक विक्रेता विदेशी पर्यटकों को पर्यटन सम्बन्धी कम मूल्य की पुस्तकें अधिक मूल्य में बेचते हैं, ऐसी घटनायें गोरखपुर मण्डल के पर्यटन विकास में बाधक हैं।

गोरखपुर मण्डल में पर्यटन विकास की उपर्युक्त समस्याओं के निराकरण एवं भारतीय पर्यटन की भावी दिशा के निर्धारण हेतु हमें प्रयास करने होंगे क्योंकि एक आंकलन के अनुसार लगभग 60 करोड़ पर्यटक विश्व भर में एक स्थान से दूसरे स्थान का भ्रमण करते हैं पर भारत में इसका मात्र 0–4÷ भाग ही पहुँचता है। इसका मुख्य कारण पर्यटन सुविधाओं के अभाव के साथ–साथ विदेशी मीडिया द्वारा दुष्प्रचार कर भारत को असुरक्षित और खतरनाक बताकर प्रायः पर्यटन के लिये निषिद्ध घोषित कर दिया जाता है। आन्तरिक असुरक्षा, अशान्ति, आतंकवाद, दंगा फसाद और सीमा पार से युद्ध की आशंका वाला देश बताकर पर्यटकों को प्रायः भारत से दूर रहने की सलाह दी जाती है। आवश्यकता इस बात ही है कि भारत को सुन्दर भारत, सुरक्षित भारत, सुसंस्कृत भारत कहकर विज्ञापित किया जाना चाहिये। विपणन के सभी सिद्धांतों और तकनीकों का प्रयोग पर्यटन व्यवसाय की सफलता के लिये अपरिहार्य है। यदि पर्यटन को विपणन मानकों के आधार पर व्यापारिक दृष्टि से सेवा के रूप में बेचा जाय तो यह उद्योग गोरखपुर मण्डल अन्ततः उत्तर प्रदेश की कायाकल्प करने की शक्ति रखता है। इस हेतु निम्न सुझाव जैसे विशेष अवसरों पर विशेष विपणन एवं विज्ञापन अभियान, आवागमन की बेहतर सुविधायें, पर्यटन में विविधीकरण, पर्यटन शिक्षा का प्रसार, पर्यटन प्रशासन का विकेन्द्रीकरण, सस्ती सुविधाजनक पर्याप्त आवास सुविधायें, हवाई अड्डों का निर्माण, पर्यटन सुविधाओं का पूर्णकालिक उपयोग आदि दिये जा सकते हैं। कहा जा सकता है कि अतीत के संदेह और अज्ञानता के कुहासे से निकल कर इस क्षेत्र का पर्यटन उद्योग का काफिला उस मुकाम पर आ पहुँचा है, जहाँ से सुखद भविष्य की स्वर्णिम बाहों का आमंत्रण स्पष्ट दिखाई पड़ता है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1– *सांख्यिकीय पत्रिका,* गोरखपुर मण्डल, 2009, पृ0 **1–5**

2– *प्रतिबिम्ब यैलो पेजेस,* गोरखपुर प्रथम संस्करण पब्लिशर्स प्रतिविम्ब प्रकाशन, 108, संजय कालोनी, दूहरादून रोड, रुड़की, मई, 2010

3– तदैव

4– स्मारिका बुद्ध स्मृति पर्व 2000, कुशीनगर, प्रकाशक–महोत्सव समिति, क्षेत्रीय पर्यटन कार्यालय, गोरखपुर, पृ0 **8–9**

5– *प्रतिबिम्ब यैलो पेजेस,* गोरखपुर प्रथम संस्करण पब्लिशर्स प्रतिविम्ब प्रकाशन, 108, संजय कालोनी, दूहरादून रोड, रुड़की, मई, 2010